कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MJY–003

स्नातकोत्तर कला उपाधि कार्यक्रम (ज्योतिष)

(एम. ए. जे. वाई.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.जे.वाई.-003 : पञ्चाङ्ग एवं मुहूर्त्त

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र कुल दो खण्डों में विभाजित है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं। दोनों खण्डों में दिए गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक दीजिए : $20 \times 3 = 60$

(क) पञ्चाङ्ग किसे कहते हैं ? विस्तार से लिखिए।

(ख) द्वादश राशियों में नक्षत्रचरण विभाजन चक्र द्वारा दर्शाकर विस्तार से वर्णन कीजिए।

(ग) "विष्टि" करण में भद्रा होती है। चक्र द्वारा तिथि विभाजन करते हुए दर्शाइए।

(घ) "सम्पूर्ण विश्व को वार क्रम भारतीय ज्योतिष की देन है।" काल होरा द्वारा विस्तार से प्रदर्शित कीजिए।

(ङ) षोडश संस्कारों के नाम क्रमशः लिखिए तथा विवाह संस्कार पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

(च) सत्ताइस नक्षत्रों का वर्णन कीजिए।

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

$10 \times 4 = 40$

(क) ग्रहण काल में कृत्याकृत्य कर्म को शास्त्रीय विधि से लिखिए।

(ख) तिथियों के नाम लिखते हुए कृष्णपक्ष में अमावस्था तथा शुक्लपक्ष में पूर्णिमा का कारण सहित वर्णन कीजिए।

(ग) विवाह में त्रिबल शुद्धि विचार क्या होता है ? विस्तार से लिखिए।

(घ) तिथि क्षय व तिथि वृद्धि कैसे होती है ? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) "गृहप्रवेश में कलश चक्र का विचार किया जाता है।" आरेख द्वारा वर्णन कीजिए।

(च) नक्षत्रों की विभिन्न संज्ञाओं का वर्णन कीजिए।

(छ) गोधूलि लग्न की विशेषताएँ लिखिए।

(ज) द्वार स्थापन विधि का वर्णन कीजिए।

× × × × ×